कॉपी राईट एक्ट का उल्लंघन एक अपराध है

किसी के लेख या रचना को बिना लेखक की अनुमति के कहीं किसी भी रूप में प्रकाशित नहीं करवाया जा सकता परन्तु इस अधिनियम की अवहेल्ना करते हुए श्री पृथ्वी सिंह बैनीवाल बिश्नोई द्वारा रचित श्री गुरु जम्भेश्वर चालीसा एवं दो आरती इत्यादि जो श्री तरूण बिश्नोई, ए–11, वन्दना अपार्टमैंट, सैक्टर–13, राहिणी, दिल्ली–110085 मो.नं. 98183–33210 ने बिना लेखक की अनुमति के अपने पिता को रचनाकार दर्शाते हुए उक्त श्री गुरु जम्भेश्वर चालीसा एवं दोनों आरती इत्यादि खुद प्रकाशित करवा दिया था। इसलिए कॉपी राईट अधिनियम के अन्तर्गत श्री पृथ्वी सिंह बैनीवाल बिश्नोई की ओर से श्री ज्योति प्रसाद षर्मा, एडवोकेट, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय, चण्डीगढ़ ने कॉपी राईट एक्ट के उल्लंघन का नोटिस जारी कर दिया। इस पर श्री तरूण बिश्नोई, ए–11, वन्दना अपार्टमैंट, सैक्टर–13, राहिणी, दिल्ली–110085 मो.नं. 98183–33210 ने बिना शर्त माफी माँगी और भविष्य में कभी ऐसी गल्ती न करने का वचन दिया है। उनका माफी नामा निम्न प्रकार से है :–

सम्पादक अमर ज्योति पत्रिका, हिसार।

"To,

Sh. J.P. Sharma, Advocate # 587, Sector-10, Panchkula-134113 (Haryana) C/O Sh. Pirthvi Singh Beniwal S/O Sh. Banwari Lal Beniwal R/O H.No. 189-F, Sector-14, Panchkula. Subject : Your Ref. Your Legal Notice Dated 29-10-2012 (Received by us on 23 Nov. 2012 at 2 pm) Unconditional Apology Re-Publishment of Aarti of Guru Jambheshwar & Guru Jabheshwar Chalisha"

Dear Sir,

- With reference to above, we hereby tender our "APOLOGY" at desired by you vide your Notice' PARA No. '7'

-More over, as desired by you , under your Notice PARA No. '8' we assure you that we will not publish/ distribute the above Subjected, "CHALISA & AARTI" in the future.

–We once again Send our 'APOLOGY' to Mr. Pirthvi Singh Beniwal, Since it was our mistake to copy the same white praying Tribute to my Father Late Sh. K.K. Singh Bishnoi, on FOC basis (Since we liked your book) but in that process, I never knew that I am having Pirthviji & violating any.

–I hope you would understand that it was total 'Unintentional ' and hence request to you please accept our "APOLOGY" and withdraw & Close the Issue forever.

–Your Legal Notice dated 29-10-2012 was received by us only on 23 November, 2012 at 2PM (Copy Xerox Enclosed herewith) since you asked to tender "unconditional Apology" within 15 days after receipt of Notice.

–Morover, Please also note that now, we do'not have any single book left with us, which we got published in year 2008.

–We shall be grateful if you could kindly intimate us that you have pardoned & oblige us.

–Thanks in advance for your understanding & co-operation.

–Thanks/Best Regards.

-Sd-

Dated :27-11-2012 TARUN BISHNOI.

(A-11, VANDANA APPATTs, Sec-13,ROHINI, DELHI-110085 (M-98183-33210)

श्री गुरु जम्भेश्वर चालीसा

रचनाकार : पृथ्वी सिंह बैनीवाल बिश्नोई

–दोहा–

श्री विष्णु विष्णु सुमरण कर, माता हँसा चरण चित लाय ।
श्री गुरु जम्भश्वर का चालीसा मैं लिखूं, जगत हित दर्शाय ।।
दीन दयाल श्री गुरु जम्भ है, हरण सकल दुःख भार ।
जय जय भक्त रक्षक ईश्वर, जय श्री पीपासर अवतार ।।

।। चौपाई ।।

जय जम्भ दात्ता ज्ञान उजागर । जय गुरु देव दया के सागर ।। 1 ।।
हँसा के पुत्र गुरु जम्भ मुरारी। तीन लोक है शरण तुम्हारी ।।2 ।।
जय जग पालक जय सर्वेश्वर। जय जय नृसिंह जय योगेश्वर ।।3 ।।
भाद्धो बदी जब अष्टमी आई। प्रगट भये तब जग हर्षाई ।।4 ।।
लोहट घर प्रभु पावन अवतारा। जगत पिता गुरु मुकुट सितारा।।5 ।।
कर कमण्डल सिर पर टोपी। कोटि बारहा की जलाई ज्योति।।6 ।।
गुरु बालापन्न में लीला धारी। साल सताईस गुऊवां चारी।।7 ।।
अखिल ब्रह्मांड के सृजनहारा। भक्त हेत मनुज तन धारा।।8 ।।
गुरु संतजनों के सदा सहाई। थी गऊ हत्या बन्द कराई।।9 ।।
भगवाँ धर प्रभु काज संवारे। हासम कासम थे दर्जी तारे ।।10 ।।
गुरुजी ऊद्धो तार दिया हजूर । प्रभु थारी महिमा है भरपूर ।।11 ।।
मुकन, विल्हो, केसो, परमानन्दा। जन्म मरण मम काट्या फन्दा।।12 ।।
और बहुत भक्त प्रभु तारे। काम क्रोध शत्रु सब मारे।।13 ।।
है अजर गुरु अविनाशी। पूर्ण ब्रह्म सकल घटवासी।।14 ।।
उत्पन्न पालक सकल प्रकाशक । धर्म के दात्ता पाप विनाशक ।।15 ।।
देवी देवता सब शीश निवावै। ऋषि मुनि थारो पार न पावै।।16 ।।
बड़े बड़े तप कर हारे । निगम अगम बे अन्त पुकारे ।।17 ।।
वन्य सम्पदा के तुम रखवारे । जीव दय सब बिश्नोई धारे ।।18 ।।
जिस पर कृपा तुम्हारी होवै । विपदा उस पर कदै आवै ।।19 ।।
विक्रम सम्वत 1542 की आई । उणतीस नियम दे पंथ चलाई ।।20 ।।
कार्तिक बदी जब अष्टमी आई । युक्ति मुक्ति की राह दियाई ।।21 ।।
दे कर पाहल गुरु बिष्नोई बनाये। मद्य माँस सब नशे छुड़ाये ।।22 ।।
जब जब पाप बढ़े जग माहीं। तब आ प्रभु धर्म बढ़ाई ।।23 ।।
तीन लोक में गुरु व्यापै आपै। थै अपनी काया संवारी आपै ।।24 ।।
हरी कंकैहड़ी गुरु आसन धारै। बैठ सम्भराथल शबद उचारै ।।25 ।।
वेद पुराण तेरा भेद न पावै । गीता महिमा तुम्हारी गावै।।26 ।।
सुख दुःख सब मान समाना । कर सन्तोष विष्णु गुण गाना ।।27 ।।
काम धर्म अर्थ मुक्ति फल पावै । ज्ञान कर्म प्रभु ध्यान बतलावै ।।28 ।।
कलह न व्यापै शान्ति आवै । कोई रोग दोष निकट न आवै ।।29 ।।

सबके विषय विकार मिटावै । मिटावै रोग विकार हटावै ।।30।।
शून्य मण्डल वासी ज्ञान दात्ता। विष्णु सुमर शुभ फल पाता ।।31।।
युग युग है प्रभु मंगलकारी । दुष्ट निकन्दन संकटहारी।।32।।
जो जो शरण आपकी आवै। अन्त परम धाम वो पावै।।33।।
पर दुःख कातर–सबका माली। तेरी आशा कोई न खाली ।।34।।
हो सफल जन्म मिटै सब पीरा। जहाँ लगे प्रभु शब्द ज्ञान समीरा।।35।।
जम्भगुरु ध्यावै, सर्व सिद्धी पावै। हवन यज्ञ शुभ कर्म सिखावै।।36।।
विष्णु विष्णु जप करो हमेशा। गुरु काटे आवागवण कलेशा।।37।।
जो गुरु जम्भेश्वर चालीसा गावै। वो अन्त परम धाम को पावै ।।38।।
तीर्थ तालवा मुकाम जो जावै। जीवन अपना वो सफल बनावै ।।39।।
"पृथ्वीसिंह" नित गुरु दर्शन पावै । विष्णु भण विष्णु धाम है जावै।।40

–दोहा–

नित उठ पाठ करो चालीसा, पाळो नियम उणतीस ।
मनो कामना सब पूर्ण करै, श्री जम्भ गुरु जगदीश ।।
गुरु जम्भेश्वर नाम जिभिया जपे,दिल में धारै जोय ।
जीवन में युक्ति मुक्ति मिलै, पुनः जन्म नहीं होय ।।

श्री गरु जम्भेश्वर धुन–साखी

पात : आये म्हारै जम्भ गुरु जगदीष, सुर नर मुनि हरी नै निवावै शीश ।। टेर।।
सायं : गुरु जी आप सम्भराथल आये हो, म्हारै संता रै मन भायै हो ।।
गुरु जी लोहट घर अवतारा हो, ऐ तो धिन धिन भाग हमारा हो ।।1।।
गुरु जी अलख निरंजन आये हो, ऐ तो म्हारै संता रै मन भाये हो ।।2।।
गुरु जी घट घट मायं विराजै हो, ऐ तो सरस षबद धुनि गाजै हो ।।3।।
गुरु जी थारै चरण कोई ध्यावै हो, बे तो चार पदार्थ पावै हो ।।4।।
गुरु जी सम्भराथल आसन साजै हो। बित झिग मिग ज्योति विराजै हो ।।5।।
गुरु जी नन्द घर गऊवाँ चारी हो। थै तो नख पर गिरिवर घारी हो ।।6।।
गुरु जी पूर्ण ब्रह्म अखण्डा हो । थारै रोम कोटि ब्रह्मंडा हो ।।7।।
गुरुजी थारी इस धुन को कोई गावै हो। बे तो वास बैकुण्ठा पावै हो।।8।।
श्री जम्भ गुरु जी थारी आशा हो, थारो जस गावै गंगा दासा हो ।।9।।

आरती

संध्या सुमरण आरती, भजन भरोसे दास।
मनसा वाचा कर्मणा, सतगुरु चरण निवास।।
पीपासर सूँ परगटे, द्वादष कारण देव।
ब्रह्मादिक पावै नहीं, अद्भुत जाकौ भेव ।।
धरणी धर करत हूँ, नमस्कार सौ बार।
ईष्ट देव बाबो जम्भ गुरु, लीला हित अवतार।।

आरती

ओ३म जय जम्भेश हरे, स्वामी जय जम्भेश हरे।
तुमरो नाम रटत ही, कोटिक जीव तरे ।। टेर।।
पूरण ब्रह्म दयामय, शंकर अविनाशी।
विष्णु रूप धरंता, घट घट के वासी ।।1।।
तुम हो सर्व गुणा कर, सतगुरु औंकारा।
नेति नेति कहि गाते, नहीं पावै पारा ।।
परमानन्द नारायण, निश्चय जगदीशा।
शिव ब्रह्मादि नवावत, तुमको नित शीशा ।।3।।
तुम हो अलख निरंजन, आनन्द के देवा।
तीन ताप मिट जाते, करते ही सेवा।।4।।
प्रभु तुम दीन दयालु, संतन हितकारी ।
कर में माल सुहावत, मुख शौभा न्यारी ।।5।।
सम्भराथल पै विराजै, जग पालन कर्त्ता ।
झिग मिग ज्योति प्रकाशै, भव दुःख के हर्त्ता ।।6।।
श्री जम्भदेव जी की आरती, सेवक जन गावै।
परमानन्द लूट कर, हरी दर्शन पावै।।7।।
ओ३म जय जम्भश हरे, स्वामी जय जम्भश हरे।
तुमरो नाम रटत ही, कोटिक जीव तरे ।। 8।।

आरती

ओ३म जय जम्भ गुरु देवा, स्वामी जय जम्भ गुरु देवा ।
जय जय जग पालक, गुरु फल मुक्ति देवा ।।टेर।।
ओ३म जय जम्भ देव, जय जम्भ देव ।
लोहट पुत्र हँसा सुत, महिमा अति भारी ।
ताप सन्ताप मिटाओ, संकट सब हारी ।।1।। ओ३म जय
बाल समय में गुरु जी, तुमने मौन कियो।
देवन स्तुति किन्हीं तब ही तोड़ दियो ।।2।। ओ३म जय ...
विक्रम पन्द्रह सौ बिंयाळै, बिष्नोई पंथ चलाये ।
कारज कठिन संवारे, प्रभु सन्तन के मन भाये ।।3।।
कैद हुए हासम कासम, भारी सोच भयो ।
पल में कैद छुड़ाई, सब दुःख दूर कियो ।।4।।
धाम मुकाम में शौभित, दर्षन अति भारी ।
अमावस फागण आसौज में लागै, मेला हर बारी ।।5।। ओ३म जय
श्री जम्भ गुरु जी की आरती, जो कोई सेवक जन गावै।
पृथ्वीसिंह षरण गुरु की, मन वान्छित फल पावै।।

आरती

ओ३म जय गुरु देव हरे, स्वामी जय गुरु देव हरै ।।
भगत हेत श्री विष्णु जी, भिन्न भिन्न रूप धरै ।।टैक।।
मत्सय रूप धर आये, प्रभु वेदो पै ध्यान दियो।
सत्यव्रत राजा को , वेदों का ज्ञान दियो।।1।। ओ३म जय ...
कच्छ रूप धर कर, प्रभु सागर मंथन हारी ।
अमृत रत्न सागर में पाये, सबक कारज सारी ।।3।। ओ३म जय ...
वराह रूप धर आये, पृथ्वी दन्त पर धारी।
दानव हिरणाक्ष संहारै, सन्तन हितकारी ।।4।। ओ३म जय ...
नृसिंह रूप धारण किन्हों, भक्त प्रह्लाद उबारा ।
दैत्य भारी हिरणाकुष, प्रभु आन आप संहारा ।।5।। ओ३म जय ...
वामन रूप धर आये, प्रभु बलि राजा चैतायो ।
सकल ब्रह्माण्ड को लेकर, पाताल बलि पहुँचायो ।।6।। ओ३म जय ...
परशुराम होय क्षत्रिपन साध्यो, भक्त हेत ले अवतारा ।
कर पाप हरण धरणी का, दुष्ट क्षत्रिय सब संहारा ।।7।। ओ३म जय ...
रावण कुल संहारण को, रघुनन्दन रूप धरे ।
लाल कौशल्या बन आये, ऋषि–मुनि काज सरे ।।8।। ओ३म जय ...
चक्र सुदर्शन धर आये, कँष दुष्ट संहारी ।
गीता ज्ञान दियो जग को, भव बन्धन हारी।।9।।ओ३म जय ...
बुद्ध रूप गयासुर मार्यो, प्रभु हृदय प्रकाश कियो ।
मार्ग अष्ट बतलाया, शान्ति सुख का सन्देष दियो ।।10।। ओ३म ...
कलीकाल जम्भगुरु आये, पीपासर अवतार लियो ।
हरि कंकैहड़ी मण्डपमेड़ी, सम्भराथल प्रचार कियो ।।11।। ओ३म जय ..
दशम रूप प्रभु कृपालु, निकंलक रूप धारे ।
"पृथ्वीसिंह" नवण गुरु को, वो सबके रखवारे ।।12।। ओ३म जय.....

आरती

ओ३म जय अमृता माता, मैय्या जय अमृता माता ।
तुमरो नाम लेत ही, दृष्य खेजड़ली रा आता ।। टेर।।
पूरण समर्पित दयामय, माता तू अमर बलिदानी ।
विष्णु धाम मिलंता , बण गई माता पूज्या राणी ।।1।। ओ३म
तुम हो सर्व गुण सम्पन्न, जम्भ सतगुरु की चेली ।
सर्वस्व वार दिया, रूँखा हित अपनी गर्दन मेली ।।2।। ओ३म जय ...

तेरा करै अनुकरण, माता थारी तीनों कन्याएं ।
कर दर्षन नारायण, नियम रूँख रक्षा रा निभावै ।।3।। ओ३म.
तुम हो बिश्नोई गौरव, रग रग जोश भर्या ।
खुल गये दिव्य चक्षु, जब वीर बलिदान कर्या ।।4।।
दीन दयालु अमृता माता, रूँखा री हितकारी ।
हंसते हंसते दी कुर्बानी, थारी मुख शोभा न्यारी ।।5।। ओ३म
वीर भोम खेजड़ली विराजै, रूँखा रा रखवाला ।
शहीद स्मारक साजै, मेला खेजड़ली वाला ।।6।। ओ३म जय....
खेजडली में अमृता रो वासो, जीवां रा पालन कर्ता।
हिरणा री रक्षा करता, सब जीवां रा दुःख हर्त्ता ।।7।। ओ३म
अमृता माता जी री आरती, जो कोई वीर सेवक गावै।
पृथ्वी सिंह राख धर्म नै, श्री विष्णु दर्शन पावै ।।8।। ओ३म जय ...